दुर्गा सप्तशती

बीजमंत्रात्मक साधना



शंकर पुरस्वानी, मोहन किराणा स्टोर, प्रतापनगर, उदयपुर। 9414850943

विवरणिका







समर्पण

ऊँ गं गणपतये नमः।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

स्व.श्री शोभराज मल पुरस्वानी
स्व. उमेश जी गौड़
परम् पूजनीय स्व. दादा–दादी जी श्री
शोभरामल जी
रुक्मणी देवी , स्व. चाचा श्री अशोक पुरस्वानी,
परम् पूजनीय माता–पिता
श्रीमती नानकी देवी – श्री मोहनलाल पुरस्वानी
एवं सद्‌गुरु स्व. श्री उमेश जी गौड़
के चरण कमलों में सादर समर्पित।

शक्ति साधना

शक्ति के बिना कुछ भी संभव नहीं है। शक्ति के बिना शिव भी शव हैं। अतः जीवन में शक्ति के महत्व को कोई भी व्यक्ति , समाज या धर्म नकार नहीं सकता है। जाने–अनजाने प्रत्येक मानव शक्ति की ही साधना कर रहा है फिर चाहे वह बल,धन और ज्ञान ही क्यों न हो। इसलिये सनातन धर्म में तीन शक्तियों की आराधना एवं साधना करने पर बल दिया गया है। ये तीन शक्तियाँ हैं महाकाली,महालक्ष्मी और महासरस्वती। दूसरे शब्दों में ये तीन शक्तियाँ हैं सृजन, पालन और विध्वंस। सृजन के लिये आवश्यकता है ज्ञान की,पालन के लिये धन की और विध्वंस के लिये बल की। जिस किसी में भी इन तीन शक्तियों का संतुलन होता है वह ईश्वर तुल्य हो जाता है। कई मानवों ने इन तीनों शक्तियों की साधना की और इनको सिद्ध भी किया किंतु जिन मानवों के हृदय प्रेम एवं करुणा से रहित थे, वे सभी अंहकार से ग्रसित हो गये और उन्होंने अपना ही विनाश कर लिया। सरल शब्दों में जब आप प्रेम और करुणा से भरपूर होते हैं तो आप सकारात्मक होते हैं और यदि आप अहम् से भरे होते हैं तो आप नकारात्मक होते हैं।

शक्ति की अपनी कोई ईच्छा नहीं होती है, वह तो आपकी आज्ञाकारी है। इसको
जैसे चाहे ं आप उपयागे करे। इसका फल इसके उपयागे के तरीके पर निर्भर करता है। जैसा आप बोएगें वैसा ही आपको काटना पड़ेगा। इतना अवश्य स्मरण रखियेगा कि आप एक बीज बोते हैं तो उसके परिणाम में अस्तित्व आपको हजारों बीज लौटाता है। अब आपको कैसे बीज बोने हैं यह आपको तय करना होगा। आप प्रेम और करुणा के बीज बोना चाहते हैं या फिर काम, क्रोध,लोभ,मोह और अहंकार के। अब आप निर्णय ले लीजिये और साधना के लिये तैयार हो जाईये। राम बनना है या रावण जो कुछ भी आप बनना चाहें मार्ग एक ही है और वह है शक्ति साधना। आपकी जैसी भी ईच्छा हो माँ भगवती अवश्य पूर्ण करेगी लेकिन फल के लिये वह जिम्मेदार नहीं होगी। परिणाम की जिम्मेदारी तो सिर्फ और सिर्फ आपकी ही होगी ।

।। जय महामाया,जय जगजननी।।

उपासना विधि

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां यतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुंउरीकाक्षं स बाह्याभ्यान्तरः शुचि।।
इस मंत्र को पढ़ते हुए अपने ऊपर जल छिड़कते हुए शुद्धिकरण की भावना करें।
अब आसन की शुद्धि के लिए निम्न मंत्र से भगवती पृथ्वी से प्रार्थना करें।
ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

।। शान्ति पाठः।।

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
।। ऊँ शान्तिःशान्तिःशान्तिः।।
हे परमात्मन्! आप हम दोनों(गुरु–शिष्य) की साथ–साथ रक्षा करें। हम दोनों का साथ–साथ पालन करें। हम दोनों साथ–साथ शक्ति अर्जित करें। हम दोनों की पढ़ी हुई विद्या प्रखर हो। हम दोनों एक दूसरे के प्रति कभी द्वेष न करें। हे ईश्वर! त्रिविध(आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक) तापों का शमन हो, अक्षय शान्ति की प्राप्ति हो।

।। भूत शुद्धि।।

ऊँ भूत श्रृंगाटात् शिरः सुषुम्णापथेन जीव शिवं परम शिव पदे योजयामि स्वाहा।
ऊँ यं लिंग शरीरं शोषय् शोषय् स्वाहा।
ऊँ रं संकोच शरीरं दह दह स्वाहा।
ऊँ परम शिव सुषुम्नापथेन मूल श्रंगाटम् उल्लस उल्लस,ज्वल ज्वल,प्रज्वल प्रज्वल, सोऽहं हंसः स्वाहा।
ऊँ भ्रं भूत दह दह स्वाहा

महानमन्

ऊँ गं गणपतये नमः।

ऊँ

परब्रह्म,परम्शिव–महामाया,
श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्रीमहेश,
श्रीमहासरस्वती, श्रीमहालक्ष्मी, श्रीमहाकाली,
श्री महागायत्री, श्रीललितांबा, श्रीवैष्णवी अपराजिता,
श्री दश महाविद्या, श्री नवदुर्गा, श्री चौंसठ योगिनी,
श्री कार्तिकेय,श्री गणेश, ऋद्धि–सिद्धी,शुभ–लाभ,
श्री बजरंगबली हनुमान,श्री यक्षराज कुबेर,
सूर्य–चंद्रादि नवग्रह,पंचतत्व,घरती माँ,
श्री माता–पिता,श्री गुरुमंडला,सिद्धों–बुद्धों–अर्हतों,
अखिल ब्रह्मांड,सिरजनहार को
नमन।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।

1.– गणपतिअथर्वशीर्ष

शान्ति पाठ

ऊँ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांङ्गसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न
इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो
अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ऊँ शान्तिः!शान्तिः!!शान्तिः!!!
ऊँ नमस्ते गणपतये।
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलम् कर्त्तासि।
त्वमेव केवलम् धर्त्तासि। त्वमेव केवलम् हर्त्तासि।
त्वमेव सर्व खल्विदं ब्रह्मासि। त्वम् साक्षादात्मासि नित्यम्।।1।।
ऋतं वच्मि सत्यं वच्मि।।2।।
अव त्वम् माम्। अव वक्तारमं।
अव श्रोतारम्। अव दातारम्।
अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्।
अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्।
अवचोत्तरातात्। अव दक्षिणात्तात्।
अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।।3।।
त्वं वाङ्मयस्तवं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्तवं ब्रह्म मयः।
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्म असी।
त्वम् ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।।4।।
सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वंजगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारिवाक्पदानि।।5।।
त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः।

त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं
रुद्रस्त्वं इन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।।6।।
गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः।
अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धं। एतत्तव मनुस्वरूपम्।
गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्।
बिन्दुरुत्तरूपम्। नादः संधानम्। संहिता संधिः। सैषा गणेशविद्या।
गणकः ऋषिः। निचृद गाायत्री छन्दः। श्रीमहागणपर्तिदेवता।
ऊँ गं गणपतये नमः।।7।।
एकदन्ताय विद्महेवक्रतुण्डाय धीमहि ,
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।8।।
एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशम् अंकुशधारिणम्।
अभयं वरदं हस्तेर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरम् शूर्पकर्णकम् रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्तागं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतम् च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।।9।।
नमो व्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये,
नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय् विघ्नविनाशिने शिवसुताय्
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।10।।
एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न
बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते स पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो
दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।
सांय प्रातः प्रयुन्जानो अपापो भवति। सर्वत्रधीयानोऽपीवघ्नो भवति
धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो स
यदि दास्यति स पापीयान् भवति। यो यदि मोहाद्दास्यति स
पापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन
साधयेत्।।11।।

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम् ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्। न विभेति कदाचनेति।।12।।

यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्त्रेण यजति स वांछितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते।।13।।

अष्टौ ब्राह्माणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिद्यौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति। स सर्वविद् भवति। य एवं वेद।।14।। इत्युपनिषत्।।

।। शान्ति पाठः।।

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ऊँ शान्तिः!शान्तिः!!शान्तिः!!!

।। गुरु स्तुति ।।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवै नमः।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानअंजनशलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवै नमः।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वर,
गुरुसाक्षात् परं–ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवै नमः।
स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत् किंचित् सचराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवै नमः।
नित्यानन्दम् व्यापि यत्सर्वम् त्रैलोक्यं सचराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवै नमः।
सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदाम्बुजः,
वेदान्ताम्बुजसुर्यो यः तस्मै श्रीगुरवै नमः।
चैतन्यः शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्,
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवै नमः।
ज्ञानशक्तिसमारुढः तत्वमालाविभूषितः,
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवै नमः।
अनेकजन्मसम्प्राप्तकर्मबन्धविदाहिने,
आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरवै नमः।
शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः,
गुरुपाददोकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवै नमः।
न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः,
तत्व ज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवै नमः।
मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः,
ममात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवै नमः।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।
नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम्,
नित्यबोधं चिदानन्दं गुरुर्ब्रह्म नमाम्यहम्।
ध्यानमूलं गुर्रोमूर्तिः पूजामूलं गुरोःपदम्,
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणंत्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम् देवदेव।।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आदिगुरु नमः शिवाय।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मदेवाय नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मऋषिः वसिष्ठाय् नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मऋषिः विश्वामित्राय नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मऋषिः वेदव्यासाय् नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मत्स्येन्द्रनाथाय नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गोरक्षनाथाय् नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नवनाथाय् नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वसिद्धाय नमः।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सद्गुरुनाथ उमेशाय नमः।

।। कुंडलिनी – स्तोत्राष्टकम् ।।

जन्मोद्धारनिरीक्षणीह तरुणी वेदादि–बीजादिमा,
नित्यं चेतसि भाव्यतेभुवि कदा सद्वाक्यसंचारिणी।
मां पातु प्रियदा स विपदं संहारयित्री धरे,
धात्रि त्वं स्वयमादिदेववनिता दीनातिदीनं पशुम् ।।1 ।।
रक्ताभामृत चन्द्रिका लिपिमयी सर्पाकृतिर्निद्रिता,
जाग्रत्कूर्मसमाश्रिता भगवती त्वं मां समालोकय।
मांसोद्गंध–कुगंधदोषजडितं वेदादिकार्यान्वितं,
स्वल्पान्यामलचन्द्रकोटि किरणेर्नित्यं शरीरं कुरु।।2 ।।
सिद्धार्थी निजदोषवित् स्थलगतिर्व्याजीयते विद्यया,
कुण्डल्याकुलमार्गमुक्तनगरीमाया–कुमार्गः श्रिया।
यद्येवं भजति प्रभातसमये मध्याह्नकालेऽथवा,
नित्यं यः कुलकुण्डली–जय–पदाम्भोजं स सिद्धो भवेत्।।3 ।।
वाय्वाकाशचतुर्दलेऽतिविमले वान्छाफलोन्मूलके,
नित्यं सम्प्रति नित्यदेहघटिता संकेतिता भाविता।
विद्याकुण्डलमानिनी स्वजननी मायाक्रिया भाव्यते,
यैस्तैः सिद्धकुलोद्भवैः प्रणतिभिः सत्स्तोत्रकैः शम्भुभिः।।4 ।।
वेधः शंकरमोहिनी त्रिभुवनच्छायापटोद्गामिनी,
संसारदिमहाऽसुखप्रहरणी तत्र स्थिता योगिनी।
सर्वग्रन्थि– विभेदिनी स्वभुजगा सूक्ष्मातिसूक्ष्मा परा,
ब्रह्मज्ञान–विनोदिनी कुलकुटी–व्याघातिनी भाव्यते।।5 ।।
वन्दे श्रीकुलकुण्डलीं त्रिवलिभिः सांगैः स्वयम्भू–प्रियं,
प्रावेष्ट्याम्बर–मार–चित्तचपलां बालाबलां निष्कलाम्।
या देवी परिभाति वेदवंदना सम्भावनी तापिनी,
स्वेष्टानां शिरसि स्वयम्भू–वनिता तां भावयामि क्रियाम्।।6 ।।
वाणकोटि–मृदंगनादमदना–निश्रेणीकोटि–ध्वनिः,
प्राणेशी– रसराशिमूलकमलोल्लासैक– पूर्णानना।
आषाढोद्भव–मेघवाज–नियुत–ध्वान्तानना स्थायिनी,
माता सा परिपातु सूक्ष्मपथगा मां योगिनां शंकरी।।7 ।।
त्वामाश्रित्य नरा व्रजन्ति सहसा वैकुण्ठ
कैलासयोरानान्दैक–विलासिनी शशिशतानन्दाननां कारणम्।
मातः श्रीकुलकुण्डलि प्रियकरे काली–कुलोद्दीपनेः,
तत्स्थानं प्रणमामि भद्रवनिते मामुद्धार त्वं पशुम्।।8 ।।

।। सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम् ।।

।। शिव उवाच ।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम् ।

येन मंत्र प्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ।1 ।

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।

न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ।2 ।

कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।

अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ।3 ।

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।

मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।

पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम् ।4 ।

अथ मन्त्रः ।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। ओम् ग्लौं हुं क्लीं जूं सः। ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

।।इति मन्त्रः ।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्ये नमस्ते मधुमर्दिनि ।

नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ।।

नमस्ते शुम्भहन्त्रयै च निशुम्भासुरघातिनि ।

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।।

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।

क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।

विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।।

हुं हुं हुं हुंकाररुपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय् त्रोटय् दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे।।

इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मन्त्रजार्गतिहेतवे।

अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।

यस्तु कुंजिकाया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।

न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

।। इति सपूंर्णम्।।

।। सप्तश्लोकि दुर्गा ।।

सर्व कल्याण हेतु

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

शिवः उवाच –

देवि त्वं भक्त सुलभे सर्वकार्यविधायिनी,कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः।

देव्युः उवाच–

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ,मया तवैव स्नेहेन आप्य अम्बास्तुतिः प्रकाश्यते।

ऊँ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकी स्तोमन्त्रस्य नारायण ऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्री दुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ऊँ ज्ञानिनामांपि चेंतासि देवी भगवती ही सा, बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।

दुर्गे स्मृतां हरसि भीतिम् शेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतां मती मतिव शुभां ददासि, दारिद्रय दुःख भय हारिणी का त्वद् अन्या सर्वोपकार करणाय सदा आर्द्र चित्ताः।।2।।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ते।।3।।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे सर्व स्यर्ति हरे देवी नारायणी नमोस्तुते ते।।4।।

सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ते।।5।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु सकलानभीष्टान्, त्वामाश्रितानां न विपन्नराणान् त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।6।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि, एवमेव त्वया कार्यस्मद्वैरिविनाशनम्।।7।।

।। देव्याः कीलकम् ।।

ॐ। अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य। शिव ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। श्रीमहासरस्वती देवता। श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे। सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोग।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच।

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।

श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय दुं दुर्गाय नमः शिवाय सोमार्धधारिणे।। ।।1।।

सर्वमेताद्विजानियान्मन्त्राणामभिकीलकम्।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।। ।।2।।

सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।

एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति।। ।।3।।

न मन्त्रो न औषधं तत्र न किन्चिदपि विद्यते।

विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम्।। ।।4।।

समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशंकामिमां हरः।

कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदमं शुभम्।। ।।5।।

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।

समार्प्तिन च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।। ।।6।।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः।

कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टमयां वा समाहितः।। ।।7।।

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।

इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।। ।।8।।

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।

स सिद्धः स गण सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः।। ।।9।।

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापिह जायते।

नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।। ।।10।।

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्य कुर्वाणो विनश्यति।

ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।। ।।11।।

सौभाग्यादि च यत्किंचिद् दृश्यते ललनाजने।

तत्सर्वं ततप्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।। ।।12।।

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्मपत्तिरूच्चकैः।

भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।। ।।13।।

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्याऽऽरोग्यसम्पदः।

शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सा न किं जनै।। ।।14।।

।। इति देव्याः कीलकम् समाप्तम्।।

ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।

तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम्

ऊँ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।

ब्रह्मोवाच।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वंहि वषट्कारः स्वरात्मिका।

सुधा त्वमक्षरें नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतसृज्यते जगत्

त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमम्स्यन्ते च सर्वदा।।

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।

तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।

महामोहा च भवति महादेवी महासुरी।।

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारूणा।।

त्वं श्रीस्तवमाश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलह्मणा।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।

शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।

सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।

यच्च किंचित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः त्वं किं स्तूयसे तदा।।

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत्।

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वेरः।।

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।

मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।

।। इति देव्याः तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम् सम्पूर्णम्।।

ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु।

।। अर्गला स्तोत्रम् ।।

मार्कण्डेय उवाच

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।1।।
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते।।2।।
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।3।।
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।4।।
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।5।।
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।6।।
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।7।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनी।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।8।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।9।।
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनी।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।10।।
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।11।।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।12।।

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहिबलमुच्चकैः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।13।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहिपरमां श्रियम्।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।14।।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।15।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरू।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।16।।
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।17।।
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।18।।
कृष्णेन संस्तुते देवि शाश्वद्भक्तया सदाम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।19।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।20।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।21।।
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।22।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्ताऽऽनन्दोदयेऽम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।23।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।24।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्।।25।।

।। देव्याः कवचम् ।।

ॐ। अस्य श्रीचण्डीकवचस्य। ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।
चामुण्डा देवता। अंगन्यासोक्तमातरो बीजम्।
दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्। श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थे। मम् सर्वरक्षार्थे,
सर्वकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।
।।मार्कण्डेय उवाच।।
ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाऽऽख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।।1।।
।।ब्रह्मोवाच।।
अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्,
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।1।
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च,
सप्तमं कालीरात्रीति महागौरीति च अष्टमम्,
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः,
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।2।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे,
विषमे दुर्गमे च एव भयार्ताः शरणं गताः।
न तेषाम् जायते किंचिदशुभं रणसंकटे,
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि।
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषाम् वृद्धिः प्रजायते,
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।3।
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना,
ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुढ़ासना।
माहेश्वरी वृष आरूढ़ा कौमारी शिखिवाहना,
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना,
ब्राह्मी हंससमारूढ़ा सर्वाभरणभूषिता।
इत्येता मातरः सर्वा सर्वयोगसमन्विताः,
नानाभरणशोभाढया नानारत्नोपशोभिताः।

दृश्यन्ते–रथमारूढ़ा–देव्यःक्रोधसमाकुलाः,
शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसल आयुधम उत्तमं।
दैत्यानां देहनाशय भक्तानामभयायच,
धरयन्तयायुधानीत्थं देवनां व हिताय वै।
नमस्ते अस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे,
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।
त्राहि मां देवि दुत्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि,
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेययामग्निदेवता।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी,
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी,
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेधस्ताद् वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना,
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता,
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मुर्ध्नि व्यवस्थिता।
मालाधारी ललाटे च भ्रुवो रक्षेद् यशस्विनी,
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी,
कपालौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका,
अधरे च अमृतकला जिह्वायां च सरस्वती।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका,
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला,
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी,
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।
हस्तयोर्दण्डनी रक्षेदम्बिका चाङगुलीषु च, नखान्छूलेश्वरी।
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी,
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा,

पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानूनी विन्ध्यवासिनी,
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी।
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी,
पाद अंगुलीषु श्री रक्षेद् पादाऽघस्तलवासिनी।
नखान् द्रंष्ट्राकराली च केशां च श्रीउर्ध्वकेशनी,
रोमकूपेषू कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती,
अन्त्राणी कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।
पद्मावती पद्मकोषे कफे चूड़ामणिस्तथा,
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु।
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा,
अंहकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्,
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी,
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।
आयु रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी,
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी।
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके,
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा,
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु,
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।
ऊँ दुं दुर्गायै रक्ष माम्,रक्ष माम्,रक्ष माम्।
ऊँ नमश्चण्डिकायै।

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

शान्ति पाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांङ्गसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न
इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो
अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ॐ शान्तिः!शान्तिः!!शान्तिः!!!

ॐ सर्वे वै देवा देवीम् उपतस्थुः काऽसि त्वं महादेवीति।।1।।
साऽब्रवीत्–अहं ब्रह्मस्वरूपिणि। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्।
शून्यं चाशून्यं च।।2।।
अहं आनन्द अआनान्दौ। अहं विज्ञान अविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये।
अहं पंचभूतान्यपंचभूतानि। अहमखिलं जगत।।3।।
वेदोऽहमवेदोऽम्। विद्याहमविद्याहम् अजाहमनजाहम्।
अधश्चोर्ध्व च तिर्यक्चाहम्।।4।।
अहं रुद्रेभिर् वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।।5।।
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणमं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमम्।
ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।6।।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद ।
से देवीं सम्पदमाप्नोति।।7।।
ते देवा अब्रुवन–
नमो देव्यै महादैव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।8।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान् नाशयित्र्यै ते नमः।।9।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरुपाः पशवो वदन्ति।

सा नो मन्द्रेषुमूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।10।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।11।।
महालक्ष्म्यै च विद्महेसर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।12।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।।13।।
कामोयोनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्ः।।14।।
एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशां अंकुश धनुर्बाणधरा।
एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद। स शोकं तरति।।15।।
नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।16।।
सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः।
सैषा विश्वे देवाः सोमपा असोमपाश्च।
सैषा यातुधना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः।
सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी।
सैषा प्रजापतिन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिंषि।
कलाकाश्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।
पापपहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदां शिवाम्।।17।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वाथसाधकम्।।18।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।19।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टातृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नावार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।20।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशां अंकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे।।21।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।

महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।।22।।
यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता।
यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा।
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका।
अत एवोच्यते अज्ञेयान्तालक्ष्याजैका नैकति।।23।।
मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।।24।।
तां दुर्गा दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।25।।
इदमथर्वशीर्षं योऽीते स पंचाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति।
इदमअथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयतिशतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शममष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।
दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।।26।।
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सांय प्रातः प्रयुन्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसन्ध्यायं जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। भैमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। समहामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्।।

तत्व शोधन

ऊँ श्री गणेशाय नमः।
ऊँ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ऊँ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ऊँ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

।। मृत संजीवनी मंत्र।।(7 बार)

ऊँ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये।
मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।।

।। शाप विमोचन स्तोत्रम्।।

विनियोग :–ऊँ। अस्य श्रीचण्डिकाया। ब्रह्म–वसिष्ठ–विश्वामित्र शापविमोचन मन्त्रस्य। वसिष्ठ–नारद संवाद। सामवेदाधिपति ब्रह्माण ऋषयः। सर्व ऐश्वर्यकारिणीश्रीदुर्गा देवता। चरित्रयं बीजं। ह्रीं शक्तिः। त्रिगुणात्मस्वरूप चण्डिका शापविमुक्तौ। मम् संकल्पित कार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऊँ ह्रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधु– कैटभमर्दिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।1।।
ऊँ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।2।।
ऊँ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।3।।
ऊँ क्षुं क्षुदास्वरूपिण्यै देववन्दितायै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।4।।
ऊँ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।5।।
ऊँ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।6।।
ऊँ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।7।।
ऊँ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।8।।
ऊँ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।9।।
ऊँ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।10।।
ऊँ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।11।।
ऊँ श्रं श्रृद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।12।।
ऊँ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै।

ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।13।।
ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।14।।
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वे ऐश्वर्यकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।15।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवचस्वरूपिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।16।।
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।17।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिण्यै।
त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः।।18।।

1.ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा। (7 बार)

2.ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। (7 बार)

तांत्रोक्त रात्रिसूक्त

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं नमः||1||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां नमः||2||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं नमः||3||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रैं नमः||4||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रां नमः||5||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां नमः||6||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जीं नमः||7||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं नमः||8||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं नमः||9||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नों नमः||10||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं नमः||11||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं नमः||12||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूं नमः||13||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जां नमः||14||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बौं नमः||15||
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं नमः||16||

नवार्ण मंत्रः— ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। 108 बार जप करें, जप से पहले विनियोग और न्यास करें।

विनियोग :— श्री गणपतिर्जयति। ऊँ नवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्री उषणिग अनुष्टुभ छन्दः ,श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यास :—

1.ऋष्यादिन्यास ,2. करन्यास, 3. हृदयादिन्यास, 4.अक्षरन्यास तथा दिङ्न्यास।

1.ऋष्यादिन्यास

ऋष्यादिन्यास में निम्नांकित पांच मंत्रों का अलग—अलग उच्चारण करते हुए क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण तथा नाभि— इन पांच अंगों को दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करना चाहिये :—

1. ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि।
2. गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे।
3. महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि।
4. ऐं बीजाय नमः, गुह्ये।
5. ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
6. क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।
7. अब ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मूलमंत्र का जप करते हुए दोनों हाथों को परस्पर स्पर्श करके कर—शुद्धि करें।

2.करन्यास

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगलियों,हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में निम्न बीजमंत्रों का न्यास किया जाता है—

ऊँ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श करें)

ऊँ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
(दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श करें)
ऊँ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।
(अँगूठो से दोनों मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श करें)
ऊँ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
(अँगूठो से दोनों अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करें)
ऊँ विचचे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
(अँगूठो से दोनों कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श करें)
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करें)
3.हृदयादिन्यास
ऊँ ऐं हृदयाय नमः।
(दाहिने हाथ का पांचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करें।)
ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
(सिर का स्पर्श करें)
ऊँ क्लीं शिखायै वषट्।
(शिखा का स्पर्श करें)
ऊँ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
(दाहिने हाथ की अँगुलियों से बाएं कंधे और बाएं हाथ की अँगुलियों से दाहिने कंधे का एक साथ स्पर्श करें।)
ऊँ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
(दाहिने हाथ की अँगुलियों ये दानों नेत्र तथा ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करें।)
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।
(यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर बाँयी ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आयें तथा तर्जनी और मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर तानी बजाएं।)

3.अक्षरन्यास

निम्नांकित मंत्रों को पढ़ते हुए क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करें –
ऊँ ऐं नमः शिखायाम्।
ऊँ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे।

ऊँ क्लीं नमः वामनेत्रे।
ऊँ चां नमः दक्षिण कर्णे।
ऊँ मुं नमः वामकर्णे।
ऊँ डां नमः दक्षिणनासपुटे।
ऊँ यै नमः वामनासपुटे।
ऊँ विं नमः मुखे।
ऊँ विच्चें नमः गुह्ये।
इस प्रकार अक्षरन्यास करके ऊँ ऐं ह्रीं थ्लीं चामुण्डायै विच्चे, इस मन्त्र को आठ बार पढ़ते हुए दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक सभी अंगों का स्पर्ष करें।

3.दिक्न्यास

दिक्न्यास में निम्नांकित दस मंत्रों को पढ़ते हुए क्रमशः मंत्र के देवताओं की स्थापना चुटकी बजाते हुए दशों दिशाओं में करें।
ऊँ ऐं प्राच्यै नमः। ऊँ ऐं आग्नेय्यै नमः।
ऊँ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ऊँ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
ऊँ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ऊँ क्लीं वायव्यै नमः।
ऊँ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ऊँ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ऊँ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चै ऊर्ध्वाय नमः।
ऊँ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चै भूम्यै नमः।

ध्यानः—

अब माँ आदिशक्ति का ध्यान करें।

माला पूजन मंत्र

भगवती के ध्यान के बाद ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः मन्त्र से माला की पूजा करें।
ऊँ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरुपिणी।
चतुर्वर्गरूत्वयि न्यस्तस्तस्मात् मे सिद्धिदा भव।।1।।
ऊँ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम् सिद्धये।।2।।
इसके बाद ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मंत्र का 108 बार जप करें।

विनियोग

ऊँ अस्य श्रीचण्डी सप्तशत्याः प्रथम–मध्यमोत्तर–चरित्राणाम्, ब्रह्मा–विष्णु–रूद्र ऋषयः, गायत्री उष्णिगनुष्टुभ छन्दांसि, श्रीमहाकाली– श्रीमहालक्ष्मी– श्रीमहासरस्वत्यो देवता, ऐं ह्रीं क्लीं बीजानी, नन्दा– शाकम्भरी– भीमाः शक्तयः , अग्नि–वायु–सूर्याः तत्वानि, ऋग्–यजुः–साम–वेदाः ध्यानानि,सकल कामना सिद्धये श्रीमहाकाली–श्रीमहालक्ष्मी–श्रीमहासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगलियों,हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में निम्न बीजमंत्रों का न्यास किया जाता है–

ऊँ ऐं स्लूं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं फ्रें नमः तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं क्रीं नमः मध्यमाभ्यां नमः।

(अँगूठो से दोनों मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं म्लूं नमः अनामिकाभ्यां नमः।

(अँगूठो से दोनों अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं घ्रैं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

(अँगूठो से दोनों कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं ऐं श्रूं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करें)

हृदयादिन्यास

ऊँ ऐं स्लूं नमः हृदयाय नमः।

(दाहिने हाथ का पांचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करें।)

ऊँ ऐं फ्रें नमः शिरसे स्वाहा।

(सिर का स्पर्श करें)

ऊँ ऐं क्रीं नमः शिखायै वषट्।
(शिखा का स्पर्श करें)
ऊँ ऐं म्लूं नमः कवचाय हुम्।
(दाहिने हाथ की अँगुलियों से बाएं कंधे और बाएं हाथ की अँगुलियों से दाहिने कंधे का एक साथ स्पर्श करें।)
ऊँ ऐं घ्रैं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।
(दाहिने हाथ की अँगुलियों ये दानों नेत्र तथा ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करें।)
ऊँ ऐं ऐं श्रूं नमः अस्त्राय फट्।
(यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर बाँयी ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आयें तथा तर्जनी और मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाएं।)

अध्याय – 13 सुरथ – वैश्यवरप्रदानम्।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30

।। इति त्रयोदशोऽध्यायः।।

अध्याय–1 मधु–कैटभ वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं युं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्यैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
45 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
46 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
47 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
48 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
49 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
50 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
51 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
52 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
53 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
54 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
55 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
56 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
57 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

58 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
59 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
60 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हसौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
61 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
62 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
63 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
64 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
65 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
66 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
67 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
68 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
69 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
70 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
71 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ठां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
72 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ट्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
73 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
74 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
75 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
76 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
77 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
78 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
79 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
80 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
81 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
82 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
83 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
84 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
85 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
86 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
87 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
88 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

89 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऋं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
90 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
91 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
92 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
93 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
94 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
95 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
96 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
97 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
98 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
99 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
100 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
101 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
102 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
103 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
104 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।।इति प्रथमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 12 फलस्तुतिः।

ॐ नमश्**चण्डिकायै।**

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दिं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्षां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41

।। इति द्वादशोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय–2 महिषासुर सैन्य वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

26 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
27 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्र्यूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
45 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
46 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
47 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
48 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
49 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
50 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
51 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
52 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
53 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्व्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
54 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
55 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
56 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

57	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
58	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
59	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
60	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
61	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
62	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्फीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
63	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
64	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
65	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
66	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
67	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
68	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
69	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ङुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति द्वितियोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 11 नारायणी स्तुतिः ।

ऊँ नमश्चण्डिकायै ।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्व्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं थ्प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55

।। इति ऐकादशोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय–3 महिषासुर वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्षं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 10 शुम्भ वधः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्वां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं इं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्स्हल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32

।। इतिदशमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।

अध्याय 4 – इन्द्रादि स्तूतिः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं घ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हलौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति चतुर्थोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 9 निशुम्भ वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्ष्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41

।। इति नवमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय 5 – देव्या दूत संवाद।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ली दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हस्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	56
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	57

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	58
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	59
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	60
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	61
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	62
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्वां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	63
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	64
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	65
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	66
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	67
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	68
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	69
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	70
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	71
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	72
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	73
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	74
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	75
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	76
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	77
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	78
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	79
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	81
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं पूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	82
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	83
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	84
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	85
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	86
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	87
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	88
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	89

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	90
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	91
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	92
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	93
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	94
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं किं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	95
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	96
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रंक्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	97
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	98
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	99
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	100
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	101
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	102
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	103
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	104
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	105
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	106
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	107
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्स्त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	108
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	109
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मक्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	110
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	111
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	112
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	113
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	114
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	115
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	116
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	117
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	118
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	119
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	120

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	121
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	122
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	123
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	124
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	125
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	126
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	127
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	128
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	129

।। इति पंचमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 8 रक्तबीज वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्हल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्मौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्हों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ख्सें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्स्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं तीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं थ्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं न्स्लुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	56
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	57

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	58
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	59
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	60
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	61
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	62
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	63

।। इति नामाष्टमोऽध्यायः। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 6 धूम्रलोचन – वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं अ्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं अ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मक्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24

।। इति षष्ठोऽध्याय।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 7 चण्ड – मुण्ड वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27

।। इति सप्तमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।

।। इति सप्तशतीमन्त्रणा बीजमन्त्राः समाप्ताः।।

।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

।। मृत संजीवनी मंत्र।।(7 बार)

ऊँ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये।
मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।।

।। दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम माला।।

1	दुर्गा	दुर्गमाश्रिता	17
2	दुर्गतिशमनी	दुर्गमज्ञानसंस्थाना	18
3	दुर्गापद्विनिवारणी	दुर्गमध्यानभासिनी	19
4	दुर्गमच्छेदनी	दुर्गमोहा	20
5	दुर्गसाधिनी	दुर्गमगा	21
6	दुर्गनाशिनी	दुर्गमार्थस्वरूपिणी	22
7	दुर्गतोद्धारिणी	दुर्गमासुरसहंन्त्री	23
8	दुर्गनिहन्त्री	दुर्गमायुधधारिणी	24
9	दुर्गमापहा	दुर्गमांगी	25
10	दुर्गमज्ञानदा	दुर्गमता	26
11	दुर्गदैत्यलोकदवानला	दुर्गम्या	27
12	दुर्गमा	दुर्गमेश्वरी	28
13	दुर्गमालोका	दुर्गभीमा	29
14	दुर्गमत्मस्वरूपिणी	दुर्गभामा	30
15	दुर्गमार्गप्रदा	दुर्गभा	31
16	दुर्गमविद्या	दुर्गदारिणी	32

।। क्षमा प्रार्थना ।।

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।

दासोऽयामिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।1।।

हे माँ! मुझसे रात–दिन पाप होते रहते हैं। मैं आपका पुत्र,आपका दास हूँ ऐसा समझकर मेरे अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो।।1।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।2।।

माँ! मैं आवाहन नहीं जानता,विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता,मुझे क्षमा करो।।2।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।

यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे।।3।।

देवि! सुरेश्वरि! मैंने मन्त्रहीन,क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन ही किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो।।3।।

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत।

यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।4।।

मेरे सामन कोई पापी नहीं और आप जैसी कोई पापनाशिनी नहीं, यह जानकर महादेवी जो आपको उचित लगे,वह आप करो।।4।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।

इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू।।5।।

देवि!परमेश्वरि! अज्ञान से,भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो,वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ।।5।।

अज्ञानद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूमधिकं कृतम्।

ततसर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।6।।

सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरि! जगन्माता कामेश्वरि! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो।।6।।

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।

गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।

सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा "जगदम्ब" कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है।।7।।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।8।।

देवि सुरेश्वरि! तुम गोपनीय से भी गोतनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो।।8।।

।। इति क्षमा प्रार्थना स्तोत्रं संपूर्णम्।।

।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

दशमहाविद्यास्तोत्र्

ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।

नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनी।।1।।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।

प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।।2।।

जगत् क्षोभकरीं विद्या जगतसृष्टिविधायिनीम्।

करालीं विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।।3।।

हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।

गौरीं गुरुप्रियां गौर वर्णा अलंकारभूषिताम्।।4।।

हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।।5।।

मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्।

प्रणमामि महामायां दुर्गा दुर्गतिविनाशिनीम्।।6।।

उग्रं उग्रमयीं उग्र ताराम् उग्रगणैर्युताम्।

नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।।7।।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।

प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरी सर्वार्थसाधिनीम्।।8।।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।

आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।।9।।

श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।

प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।।10।।

त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।

शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।।11।।

सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।

नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।।12।।

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम्।

सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चिता सर्वसिद्धिदाम्।।13।।

विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।।14।।

प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।।15।।

भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।

चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।।16।।

त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।

अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।।17।।

कमलां छिन्नभालां च मातंगीं सुरसुन्दरीम्।

षोड्शीं विजया भीमां धूमां च बगलामुखीम्।।18।।

सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।

प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये।।19।।

इत्येवं च वरारोहे, स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।

पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी।।

।। कामाख्या कवच।।

सुरक्षा हेतु

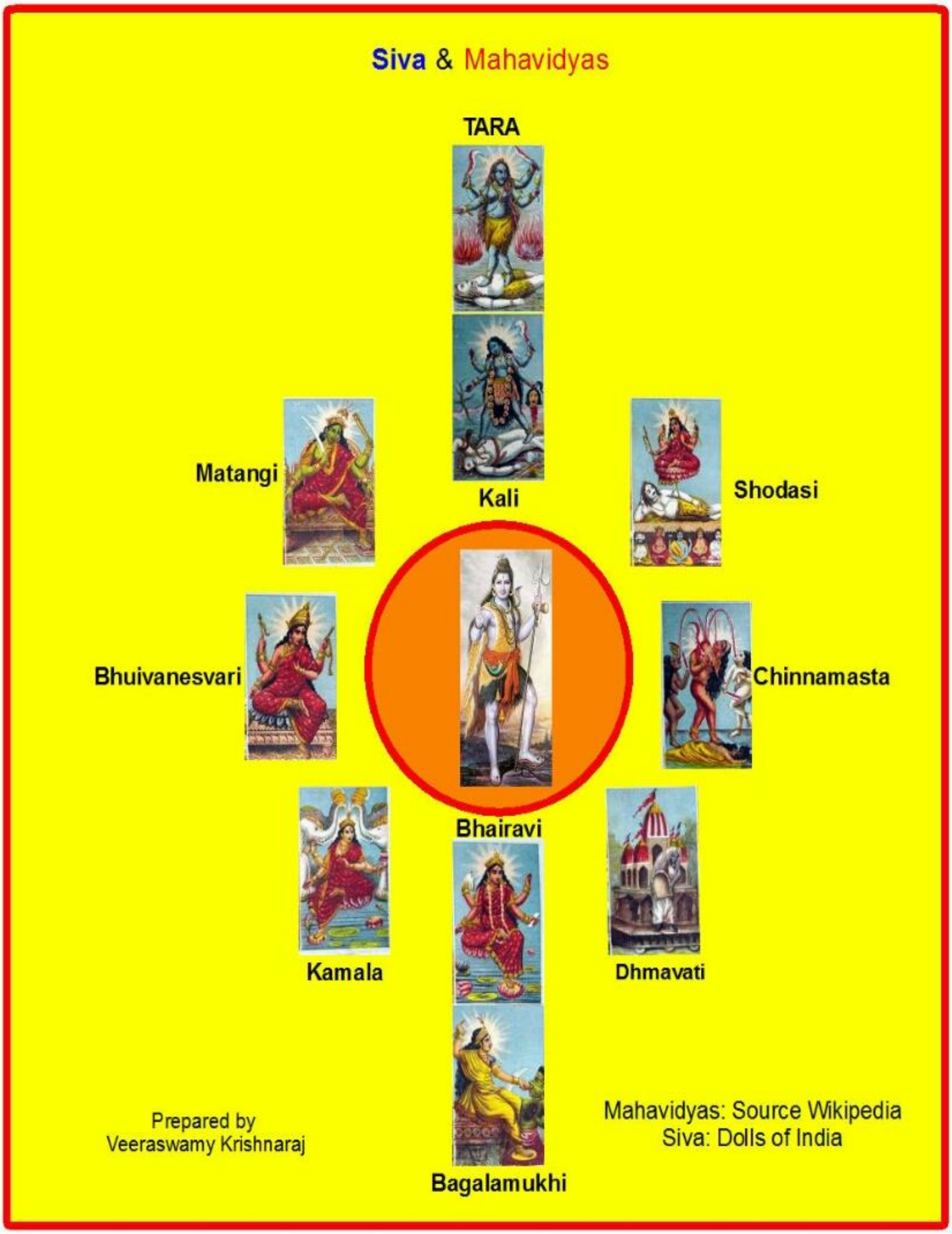
ऊँ प्राच्यां रक्षतु मे तारा, कामरुपनिवासिनी।
आग्नेय्यां षोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम्।।1।।
नैत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी।
वायव्यां सततं पातु , छिन्नमस्ता महेश्वरी।।2।।
कौबेर्यां पातु मे देवी ,श्रीविद्या बगलामुखी।
ऐशान्यां पातु मे नित्यं , महात्रिपुरसुन्दरी।।3।।
ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या , मातंगी पीठवासिनी।
सर्वतः पातु मे नित्यं ,कामाख्या कालिका स्वयम्।।4।।
ब्रह्मरुपा महाविद्या , सर्वविद्यामयी स्वयम्।
शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्रीभवगेहिनी।।5।।
त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु ,शर्वाणी पातु नासिकाम्।
चक्षुषी चण्डिका पातु , क्षोत्रे नीलसरस्वती।।6।।
मुखं सौम्यमुखी पातु , ग्रीवां रक्षतु पार्वती।
जिह्वां रक्षतु मे देवी जिह्वाललनभीषणा।।7।।
वाग्देवी वदनं पातु ,वक्षः पातु महेश्वरी।
बाहू महाभुजा पातु करांगुलीः सुरेश्वरी।।8।।
पृष्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी।
उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी।।9।।
उग्रतारा महादेवी , जङ्घा उरु परिरक्षतु।
गुदं मुष्कं च मेढ्रं च नाभिं च सुरसुन्दरी।।10।।
पादांगुलीः सदा पातु , भवानी त्रिदेशेश्वरी।
रक्त मांस अस्थि मज्जा आदि पातु देवी शवासना।।11।।
महाभयेषु घोरेषु , महाभयनिवारणी।
पातु देवी महामाया ,कामख्या पीठवासिनी।।12।।
भस्माचलता दिव्य सिंहासन कृत आश्रया।
पातु श्रीकालिकादेवी , सर्वोत्पातेषु सर्वदा।।13।।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम्।
तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षणकारिणी।।14।।
इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम।
कामाख्याया मयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम्।।15।।
अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेत्।
न तं स्पृशेद् भयं घोरं मन्त्रासिद्धिविरोधकम्।।16।।
जायते च मनः सिद्धिर्निर्विघ्नेन महामते।
इदं यो धारयेत्कण्ठे बाहौ वा कवचं महत्।।17।।
अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः।
सर्वत्र लभते सौख्यं मंगलं तु दिने दिने।।18।।
यः पठेतप्रयतो भूत्वा कवचं च इदं अद्भुतम्।
स देव्याः पदवीं याति सत्यं सत्यं न संशयः।।19।।

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया जय मंगलकरणी, मैया जय आनन्दकरणी।।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि, ब्रह्मा शिवरी।।1।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको।।2।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कंठन पर साजै।।3।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।
सुर – नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।।4।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।5।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
शुम्भ– निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।6।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु–कैटभ दोऊ मारे,सुर भयहीन करे।।7।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
ब्रह्माणी रूद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजे डमरू।।9।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हर्त्ता, सुख–सम्पत्ति करता।।10।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
भुजा चार अति शोभित, वरहु अभय धारी।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
श्रीमाल केतु मे ं राजत, कोटि रत्न ज्योति।।12।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पत्ति पावे।।13।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।


Siva & Mahavidyas
TARA
Kali
Matangi
Shodasi
Bhuivanesvari
Chinnamasta
Bhairavi
Kamala
Dhmavati
Bagalamukhi
Prepared by
Veeraswamy Krishnaraj
Mahavidyas: Source Wikipedia
Siva: Dolls of India








Om
Aiem
Hreem
Shreem
Kleem
Maha
Lakshmayai
Namah
OlgaKuczer


श्री दस महाविद्या महायन्त्र
देवी दक्षिणकाली
देवी तारा
देवी षोडशी
देवी भुवनेश्वरी
श्री श्री यन्त्रम्
देवी त्रिपुर भैरवी
देवी मातंगी
देवी कमला




श्री दुर्गा बीसा यंत्र
ॐ
ऐं
ह्रीं
क्लीं
चा
मु
डा
य
वि
श्री

अध्याय–1 मधु–कैटभ वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं युं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्यैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
45 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
46 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
47 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
48 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
49 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
50 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
51 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
52 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
53 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
54 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
55 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
56 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
57 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

58 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
59 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
60 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हसौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
61 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
62 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
63 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
64 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
65 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
66 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
67 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
68 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
69 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
70 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
71 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ठां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
72 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ट्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
73 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
74 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
75 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
76 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
77 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
78 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
79 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
80 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
81 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
82 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
83 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
84 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
85 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
86 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
87 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
88 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

89 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऋं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
90 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
91 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
92 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
93 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
94 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
95 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
96 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
97 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
98 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
99 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
100 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
101 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
102 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
103 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
104 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।।इति प्रथमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय–2 महिषासुर सैन्य वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं च्चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्य्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
45 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
46 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
47 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
48 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
49 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
50 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
51 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
52 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
53 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्व्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
54 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
55 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
56 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
57 ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

58	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
59	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
60	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
61	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
62	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्फीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
63	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
64	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
65	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
66	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
67	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
68	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
69	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ङुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति द्वितियोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय–3 महिषासुर वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्षं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26	ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
43	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
44	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय 4 – इन्द्रादि स्तूतिः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

1 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
2 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
3 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
4 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
5 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
6 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
7 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
8 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
9 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
10 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
11 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
12 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं डूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
13 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
14 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
15 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
16 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
17 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
18 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
19 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
20 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
21 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
22 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
23 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
24 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
25 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
26 ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

27 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं घ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
28 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
29 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ह्वौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
30 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
31 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ह्वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
32 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
33 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं हलौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
34 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं गीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
35 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं यूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
36 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
37 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
38 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
39 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
40 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
41 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं म्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।
42 ऊँ ऐं ह्वीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।

।। इति चतुर्थोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय 5 – देव्या दूत संवाद।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ली दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं गां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	56
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	57

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	58
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	59
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	60
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	61
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	62
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	63
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	64
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	65
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	66
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	67
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	68
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	69
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	70
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	71
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	72
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	73
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	74
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	75
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	76
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	77
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	78
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	79
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	81
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं पूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	82
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	83
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	84
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	85
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	86
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	87
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	88
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	89

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ड्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	90
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	91
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	92
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	93
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	94
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं किं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	95
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	96
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रंक्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	97
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	98
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	99
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	100
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	101
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	102
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	103
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	104
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	105
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	106
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	107
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्स्त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	108
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	109
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मक्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	110
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	111
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	112
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	113
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	114
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	115
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	116
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	117
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	118
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	119
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	120

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	121
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	122
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	123
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	124
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	125
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	126
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	127
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	128
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	129

।। इति पंचमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 6 धूम्रलोचन – वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मक्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24

।। इति षष्ठोऽध्याय।। ।। ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 7 चण्ड – मुण्ड वधः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्वं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्त्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27

।। इति सप्तमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 8 रक्तबीज वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्हल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं एं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं एं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्मौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्होंं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ख्सें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्सीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्स्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं तीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्ल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं यां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं थ्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं न्स्लुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	56
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	57

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	58
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	59
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	60
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	61
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	62
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्ल्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	63

।। इति नामाष्टमोऽध्यायः। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 9 निशुम्भ वधः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्ष्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41

।। इति नवमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 10 शुम्भ वधः ।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्वां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं इं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्स्हल्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32

।। इतिदशमोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।

अध्याय – 11 नारायणी स्तुतिः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ज्स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जुं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रैं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्व्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्फ्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं विं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	42
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	43
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	44
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्स्त्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	45
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	46
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	47
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	48
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	49
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	50
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	51
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं थ्प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	52
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	53
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	54
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	55

।। इति ऐकादशोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 12 फलस्तुतिः।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं दिं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्वीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	31
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	32
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	33
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	34
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	35
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	36
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	37
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	38
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	39
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	40
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्षां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	41

।। इति द्वादशोऽध्यायः।। ।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

अध्याय – 13 सुरथ – वैश्यवरप्रदानम्।

ऊँ नमश्चण्डिकायै।

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	1
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	2
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	3
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं औं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	4
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	5
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	6
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	7
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	8
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	9
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	10
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	11
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	12
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	13
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	14
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	15
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	16
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	17
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	18
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	19
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	20
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	21
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	22
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	23
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सूं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	24
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	25
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	26

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लौं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	27
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	28
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊँ दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	29
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं दुं दुर्गाय नमः शिवाय ।	30

।। इति त्रयोदशोऽध्यायः।।

।। इति सप्तशतीमन्त्रणा बीजमन्त्राः समाप्ताः।।

।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

।। मृत संजीवनी मंत्र।।(7 बार)

ऊँ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये।
मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।।

।। दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम माला ।।

1	दुर्गा	दुर्गमाश्रिता	17
2	दुर्गतिशमनी	दुर्गमज्ञानसंस्थाना	18
3	दुर्गापद्विनिवारणी	दुर्गमध्यानभासिनी	19
4	दुर्गमच्छेदनी	दुर्गमोहा	20
5	दुर्गसाधिनी	दुर्गमगा	21
6	दुर्गनाशिनी	दुर्गमार्थस्वरूपिणी	22
7	दुर्गतोद्धारिणी	दुर्गमासुरसहंन्त्री	23
8	दुर्गनिहन्त्री	दुर्गमायुधधारिणी	24
9	दुर्गमापहा	दुर्गमांगी	25
10	दुर्गमज्ञानदा	दुर्गमता	26
11	दुर्गदैत्यलोकदवानला	दुर्गम्या	27
12	दुर्गमा	दुर्गमेश्वरी	28
13	दुर्गमालोका	दुर्गभीमा	29
14	दुर्गमत्मस्वरूपिणी	दुर्गभामा	30
15	दुर्गमार्गप्रदा	दुर्गभा	31
16	दुर्गमविद्या	दुर्गदारिणी	32

।। क्षमा प्रार्थना ।।

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।

दासोऽयामिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।1।।

हे माँ! मुझसे रात–दिन पाप होते रहते हैं। मैं आपका पुत्र,आपका दास हूँ ऐसा समझकर मेरे अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो।।1।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।2।।

माँ! मैं आवाहन नहीं जानता,विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता,मुझे क्षमा करो।।2।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।

यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे।।3।।

देवि! सुरेश्वरि! मैंने मन्त्रहीन,क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन ही किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो।।3।।

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत।

यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।4।।

मेरे सामन कोई पापी नहीं और आप जैसी कोई पापनाशिनी नहीं, यह जानकर महादेवी जो आपको उचित लगे,वह आप करो।।4।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।

इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू।।5।।

देवि!परमेश्वरि! अज्ञान से,भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो,वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ।।5।।

अज्ञानद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूमधिकं कृतम्।

ततसर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।6।।

सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरि! जगन्माता कामेश्वरि! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो।।6।।

कामेश्वरि जगन्मातः सच्च्दिानन्दविग्रहे।

गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।

सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा "जगदम्ब" कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है।।7।।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।8।।

देवि सुरेश्वरि! तुम गोपनीय से भी गोतनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो।।8।।

।। इति क्षमा प्रार्थना स्तोत्रं संपूर्णम्।।

।। ऊँ श्री दुर्गार्पणमस्तु।।

दशमहाविद्यास्तोत्र्

ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।

नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनी।।1।।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।

प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।।2।।

जगत् क्षोभकरीं विद्या जगतसृष्टिविधायिनीम्।

करालीं विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।।3।।

हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।

गौरीं गुरुप्रियां गौर वर्णा अलंकारभूषिताम्।।4।।

हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।।5।।

मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्।

प्रणमामि महामायां दुर्गा दुर्गतिविनाशिनीम्।।6।।

उग्रं उग्रमयीं उग्र ताराम् उग्रगणैर्युताम्।

नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।।7।।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।

प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरी सर्वार्थसाधिनीम्।।8।।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।

आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।।9।।

श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।

प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।।10।।

त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।

शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।।11।।

सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।

नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।।12।।

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम्।

सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चिता सर्वसिद्धिदाम्।।13।।

विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।।14।।

प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।।15।।

भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।

चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।।16।।

त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।

अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।।17।।

कमलां छिन्नभालां च मातंगीं सुरसुन्दरीम्।

षोड्शीं विजया भीमां धूमां च बगलामुखीम्।।18।।

सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।

प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये।।19।।

इत्येवं च वरारोहे, स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।

पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी।।

।। कामाख्या कवच ।।

सुरक्षा हेतु

ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा, कामरुपनिवासिनी।
आग्नेय्यां शोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम्।।1।।
नैत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी।
वायव्यां सततं पातु , छिन्नमस्ता महेश्वरी।।2।।
कौबेर्यां पातु मे देवी ,श्रीविद्या बगलामुखी।
ऐशान्यां पातु मे नित्यं , महात्रिपुरसुन्दरी।।3।।
ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या , मातंगी पीठवासिनी।
सर्वतः पातु मे नित्यं ,कामाख्या कालिका स्वयम्।।4।।
ब्रह्मरुपा महाविद्या , सर्वविद्यामयी स्वयम्।
शीर्शे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्रीभवगेहिनी।।5।।
त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु ,शर्वाणी पातु नासिकाम्।
चक्षुशी चण्डिका पातु , क्षोत्रे नीलसरस्वती।।6।।
मुखं सौम्यमुखी पातु , ग्रीवां रक्षतु पार्वती।
जिह्वां रक्षतु मे देवी जिह्वाललनभीशणा।।7।।
वाग्देवी वदनं पातु ,वक्षः पातु महेश्वरी।
बाहू महाभुजा पातु करांगुलीः सुरेश्वरी।।8।।
पृश्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी।
उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी।।9।।
उग्रतारा महादेवी , जङ्घा उरु परिरक्षतु।
गुदं मुश्कं च मेढ्रं च नाभिं च सुरसुन्दरी।।10।।
पादांगुलीः सदा पातु , भवानी त्रिदेशेश्वरी।
रक्त मांस अस्थि मज्जा आदि पातु देवी शवासना।।11।।
महाभयेशु घोरेशु , महाभयनिवारणी।
पातु देवी महामाया ,कामख्या पीठवासिनी।।12।।
भस्माचलता दिव्य सिंहासन कृत आश्रया।
पातु श्रीकालिकादेवी , सर्वोत्पातेशु सर्वदा।।13।।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम्।
तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षणकारिणी।।14।।
इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम।
कामाख्याया मयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम्।।15।।
अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेत्।
न तं स्पृशेद् भयं घोरं मन्त्रासिद्धिविरोधकम्।।16।।
जायते च मनः सिद्धिर्निर्विघ्नेन महामते।
इदं यो धारयेत्कण्ठे बाहौ वा कवचं महत्।।17।।
अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः।
सर्वत्र लभते सौख्यं मंगलं तु दिने दिने।।18।।
यः पठेतप्रयतो भूत्वा कवचं च इदं अद्भुतम्।
स देव्याः पदवीं याति सत्यं सत्यं न संशयः।।19।।

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया जय मंगलकरणी, मैया जय आनन्दकरणी।।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि, ब्रह्मा शिवरी।।1।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको।।2।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुशप गल माला, कंठन पर साजै।।3।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।
सुर – नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।।4।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।5।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
शुम्भ– निशुम्भ विदारे, महिशासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।6।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु–कैटभ दोऊ मारे,सुर भयहीन करे।।7।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
ब्रह्माणी रूद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजे डमरू।।9।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हर्त्ता, सुख–सम्पत्ति करता।।10।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
भुजा चार अति शोभित, वरहु अभय धारी।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
श्रीमाल केतु मे ं राजत, कोटि रत्न ज्योति।।12।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पत्ति पावे।।13।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।